मीरा बाई पर केंद्रित खण्डकाव्य 'सूली ऊपर सेज पिया की': एक साहित्यिक अनुशीलन

गिरिजा नरवरिया
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय महाविद्यालय मेहगांव
भिण्ड (म.प्र.)

शोध सार

स्वर सम्राट तानसेन के युग से लेकर आज तक गीत– संगीत और काव्य सृजन के क्षेत्र में ग्वालियर नगरी की एक विशिष्ट और अविस्मरणीय भूमिका रही है। इस लोकांचल का हर अधर सहज ही गुनगुनाता और गाता है। ग्वालियर सहर की फिजाओं में भी संगीत घुला हुआ है। यहां के पत्थर भी गीत गाते है। ग्वालियर की धरा पर निवास करने वाले प्रत्येक इंसान के धडकते दिलों में सहज ही कविता के अंकुर फूटने लगते है। गीत मन की अनुभूति है, एक अंतर्नाद है जो कवियों को प्रकृति की ओर से मिला सृजन का एक वरदान है। गीत के जन्म से लेकर आज तक गीत की जो विकास यात्रा रही हैं, उसमें इतिहास के कई चरण शामिल है। ग्वालियर अंचल में हिन्दी को विष्णुदास की लेखनी से सर्वप्रथम महाकाव्य 'रमाइन' भेट किया गया था। ग्वालियर अंचल महाकवि भवभूति, बिहारी और पद्माकर, तानसेन जैसे महान कवियों एवं संगीतकारों की कर्मभूमि रहा है। इसी पवित्र भूमि पर ग्वालियर की गीत परंपरा में आधुनिक काल के गीतकारों की कतार में आकर पं दामोदर शर्मा का नाम भी अग्रणी गीत साधकों में जुड़ता है।

हिन्दी गीत परंपरा के सुप्रसिद्ध कवि पं. दामोदर शर्मा का जन्म 11 नवंबर सन् 1934 म. प्र. इन्दौर के पास महू नामक स्थान पर ननिहाल में हुआ था। आपके पिता आदि गौड ब्राह्मण वल्लभाचार्य शर्मा तथा माता श्रीमती लक्ष्मी बाई थी।

शोध प्रपत्र

पं. दामोदर शर्मा जी कुल पाँच भाई–बहन थे, जिनका लालन–पालन उनकी नानी के घर पर ही हुआ क्योकि एक सड़क दुर्घटना में उनके पिता जी का देहावसान हो गया। इस हादसे के कारण उनकी माँ का दिमागी संतुलन बिगड गया। इसी वजह से ननिहाल परिवार ही उनका सहायक बना !

पं. दामोदर शर्मा का पैतृक निवास राजस्थान भले ही रहा हो लेकिन उनके गीतों में मालवा और राजस्थान दोनों ही राज्यों की संस्कृति की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। उनका पूरा परिवार ही मीराबाई का परम भक्त रहा। मां और मौसी तो मीरा बाई की भक्ति में इतना भाव–विभोर हो जाती थी कि उनके आंखों से अश्रु–धारा वह निकलती थी। बचपन की नादानी में मौसी से पूछा करता था कि तुम ऐसे गीत क्यों गाती हो कि तुम्हारा हृदय भी तड़प उठता है और आंखों से आँसुओं की घडी लग जाती है तभी मौसी और माँ ने वात्सल्य भाव से समझाते हुए कहा–

"तब मौसी जी समझाया करती थी, मुझको,

ये गीत नही, यह तो ईश्वर का वंदन है।

जिनको तुम साधारण आँसू समझ बैठे,

यह आँसू तो गंगाजल से भी पावन है।"

और मौसी ने आगे समझाते हुए कहा–

"जिस दिन तुम इन गीतों का अर्थ समझ लोगे,

उस दिन आँसू की कीमत को पहचानोगे।

नारी का जीवन कितना कठिन हुआ करता,

जीवनी पढोगे मीरा की तब जानोगे।।''

मौसी के आशीर्वाद फलस्वरूप मैने मीराबाई के पदों को पढ़ा और गाया भी। पं. दामोदर शर्मा मीरा बाई की जीवन गाथा को पढ़कर कालांतर में उनकी भक्ति में डूबते चले गये। मीरा के व्यक्तित्व और कृतित्व को आत्मसात कर जिस तरह कृतिकार ने इतिहास और कल्पना के मिले–जुले रंगों से इस महान रचना को सजाया और संवारा है। ठीक वैसे ही मीरा के दर्द को अपनी वाणी प्रदान करता हुआ कवि मीरा बाई को ही अपना इष्ट मानता हुआ उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा अर्पित करते हुए कहता है–

''मीरा का इष्ट रहा होगा कोई छलिया,

मैं मीरा को ही इष्ट समझता हूँ अपना ।

मेरी श्रद्धा के सुमन उन्हीं को अर्पित हैं,

जिनके द्वारा हो, पूर्ण हुआ मेरा सपना।।''

''संकल्प–विकल्पों की दुनिया को छोड़ दिया,

मीराबाई को अपना सब कुछ मान लिया।

जब मूर्ति मेड़ता में देखी मैने उनकी,

लगता था मैंने राधा को पहचान लिया।।''

महाकवि पं. आनंद मिश्र द्वारा छठे दशक में प्रकाशित एवं संपादित 'आस्था के शिखर' में शामिल पं. दामोदर शर्मा की गीत यात्रा का शुभारंभ साहित्य संघ की गोष्ठियों से ही माना जाता है। पं. दामोदर शर्मा ने जो कुछ लिखा है अपने अनुभव की आँच में तपाकर भोगी हुयी पीड़ा का यथार्थ लिखा है। उनके काव्य सृजन

की शैली और अंदाज की हिन्दी जगत में अपनी एक अलग पहचान है। उनके गीत हिंदी जगत की विकास परंपरा के पथ पर मील के पत्थर है, विशेषकर ग्वालियर अंचल में वह परंपरावादी गीत और आधुनिक गीत के मध्य एक सुदृढ भव्य सेतु का निर्माण करने में सफल रहे हैं। मानवता एवं राष्ट्रीयता उनके गीतों का मूल मंत्र रहा है। उनके चिंतन का फलक बहुत विस्त्रत है। वैचारिक दृष्टि से समग्र विश्व के लोक मंगल का चिंतन एवं दर्शन ही उनके खण्ड काव्य 'सूली ऊपर सेज पिया की' का मुख्य उद्देश्य रहा है। वे अपने सृजन के माध्यम से समाज को जागरूक एवं जागृत कर समाज में नई चेतना लाने का सपना पूरा करने की कोशिश करते है।

पं. दामोदर शर्मा की गीत यात्रा बहुत ही जोखिम और संघर्षमय रही है इसी कारण उनके काव्य सृजन में भारतीय जनता के जीवन का विषाद ही उभर कर सामने आता है।

उनका सुप्रसिद्ध खण्डकाव्य 'सूली ऊपर सेज पिया की' जिसमें नारी के अंतर्मन की पीड़ा, प्रेम– पुकार और संवेदना के स्तर पर वियोग की मर्म स्पर्शी पीड़ा प्रतिफलित हुई है। ऐसी अभिव्यक्ति विश्व साहित्य में दुर्लभ है। मीरा बाई ने भक्ति युग में प्रेममयी भक्ति का काव्य रचकर प्रेम और भक्ति के भेद को ही खत्म कर कर दिया । मीरा बाई ने भक्ति एवं प्रेमरस में डूब कर गाया भी है–

"हेरी में तो प्रेम – दिवानी,

मेरा दरद न जाणे कोय।

घायल की गति घायल जाणे,

और न जाणे कोय।

सूली ऊपर सेज पिया की

किस विधि मिलना होय।।''

मीराबाई के जीवन और प्रेममय भक्ति का पं. दामोदर शर्मा के खण्डकाव्य 'सूली ऊपर सेज पिया की' पर गहरा प्रभाव है। मीराबाई भक्ति की अतुलनीय कवयित्री है। मीराबाई का व्यक्तित्व भक्ति युगीन कवियों में सबसे अलग और विलक्षण है। मीराबाई प्रेम की देवी है इसलिए अपने प्रियतम कृष्ण की दीवानी है। मीराबाई प्रसिद्ध दो राजघराने की पुत्री और कुलवधू होकर भी रैदास को अपना गुरु बनाती है। गुरु के प्रति ऐसी अनंत श्रद्धा ने ही उसे कृष्ण रस में डुबो दिया। मीराबाई अपने आराध्य से विनती करती हुई कहती है–

''तन, मन, धन सब अरपन कीनों,

छोड़ी कुल की लाज।

दो कुल त्याग भई वैरागण,

आप मिलन के काज।।''

हजारो वर्ष पूर्व नारी स्वतंत्रता का शंखनाद करने वाली मीराबाई सामाजिक – राजनैतिक बेड़ियों को तोड़ने वाली क्रांतिकारी नारी चरित्र है। मीरा बाई सामाजिक परिवर्तन के लिये लड़ने वाली, नारी स्वातंर्त्य की अखण्ड ज्योति है।

कवि के शब्दों में देखिये–

''लेकिन यही किया था उसने तोड़े जग के बंधन,

इसी लिये सारा जग करता मीरा का अभिनंदन।

विद्रोहिणी लक्ष्य को लेकर पथ पर दौड़ चली थी,

स्वर्ण – रजत की जंजीरों को पीछे छोड़ चली थी।''

मीरा बाई कृष्ण की भक्ति के माध्यम से प्रेम का प्रचार–प्रसार करने के साथ–साथ नारी मुक्ति अभियान का शिल्प तैयार करती है। कृष्ण के प्रेम में दीवानी मीरा लोक लाज की परवाह किये बिना भक्तिकाल में पुरे भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व कर 'नारी सशक्तिकरण' के इतिहास का प्रथम अध्याय लिखती है। वह शक्ति और प्रेम की पावन मंदाकिनी है। मीराबाई एक विषपाई रचनाकार है, वह विषपान करके समाज को अमृतमयी वाणी में अपनी पदावली को गाकर सुनाती हुई देश का भ्रमण करती है। इस खण्ड काव्य में पं. दामोदर शर्मा ने मीराबाई के दर्द को वाणी देते हुए कहा है–

''कितना दर्द पिया करती थी दोष न उसको देती,

प्रेम भक्ति की अविरल धारा इसी तरह से वहती।

रास रचाया जहाँ कृष्ण ने कभी वहां पर जाती,

यमुना के तट की मिट्टी को अपने शीश चढ़ाती।''

गीतकार पं. दामोदर शर्मा की दृष्टि में राधा ही अपने अनकहे दर्द को व्यक्त करने के लिए इस धरती पर बार–बार जन्म लेकर विरह मिलन की आश एवं शाश्वत प्रेम और इस प्रेम के साथ जुड़ी अनन्त पीडा को मीराबाई के स्वरों में गुंजित करना चाहती है। गीतकार पं. दामोदर शर्मा ने इस खंडकाव्य में मीरा बाई के हृदय की पीड़ा का यथार्थ वर्णन किया है। मीराबाई के पदों का गायन तो सभी करते है लेकिन मीरा बाई के पदों में जो दर्द, संघर्ष, बेचौनी है उसका मनोवैज्ञानिक सजीव वर्णन पं. दामोदर शर्मा ने किया है –

''कभी सोचता हूँ मीरा थी कौन कहां से आई,

राधा की अतृप्त आत्मा थी क्या मीरा बाई ।

राधा ने पति को छोड़ा था मीरा ने कब माना,

मीरा बाई का भी पति था नाम मात्र का राजा ।।''

(पृष्ठ – 29)

कहा जाता है कि द्वापर में राधा और कृष्ण का संयोग न हो पाने के कारण राधा वियोग की अग्नि में जलते हुए सदा–सदा के लिए मौन व्रत धारण कर के लती है। द्वापर की राधा ही कलियुग में मीरा बाई के रूप में अपने अनकहे प्रेम को अमृतमयी वाणी देती है। कवि ने राधा और मीरा को एकाकार करते हुए लिखा है–

''यह कैसा संयोग कि दोनों का प्रियतम गिरधारी,

यह कैसा संयोग कि दोनों रहीं विरह की मारी।

लोक सेविका बनी एक तो, उसकी याद संजोये

और दूसरी ने आँसू से उसके चरण भिगोये।''

(पृष्ठ – 29)

एक स्थान पर कवि मीराबाई और राधा की समाज सेवा से प्रभावित होकर कहता है–

''द्वापर की राधा हो या कलयुग की मीराबाई,

मानव सेवा का व्रत ले दोनों धरती पर आई।

द्वापर में राधा ने जन जीवन की पीर धटाई,

मीरा बाई ने कलियुग में धर्म–ध्वजा फहराई।।''

(पृष्ठ– 4)

इन पंक्तियों के माध्यम से कवि ने सुंदर वर्णन किया है–

"लोक सेविका ग्रामीणों का मन समझा लेती थी,

किन्तु मौन रह विरह व्यथा के विष को खा लेती थी।

पूर्व जन्म में राधा ने जो पीड़ा कभी न गाई,

उसी व्यथा के गीत सुनाने मीरा बन कर आई ।।"

पं. दामोदर शर्मा की कृति 'सूली ऊपर सेज पिया की' में वर्णन मिलता है कि मीराबाई भक्ति का दूसरा नाम है। मीराबाई प्रेम में व्याकुल होकर कृष्ण को सर्वस्व समर्पित कर देती है। इस खण्डकाव्य में पं. दामोदर शर्मा ने मीराबाई के बचपन से लेकर द्वारका में रणछोड़ को खोजने की कथा का मार्मिक वर्णन किया है। मीराबाई के पिता राव दूदा के चौथे पुत्र रत्न सिंह थे। उनका ज्यादातर समय कुड़की की जागीर संभालने और युद्ध की तैयारी में ही बीत जाता इस लिए मीराबाई का लालन–पालन ठीक से नहीं कर पा रहे थे एक बिन माँ की बच्ची को पालना उनके लिये कठिन ही नहीं असंभव भी था। इसी वजह से उन्होंने मीराबाई को बाबराव दूदा के पास मेड़ता भेज दिया। मेड़ता में मीराबाई के ताऊ वीरमदेव पिता समतुल्य थे, माँ से साथ सुबह शाम मंदिर में गिरधारी के दर्शन करती और उनके मुख से सुनती गीता का पाठ। मीराबाई को भक्ति अपने परिवार से विरासत में मिली। रावदूदा जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की छाप उनके संस्कारों में समाहित हो जाती है। समय की गति के साथ मीराबाई भी बड़ी होने लगती है एक बार मीरा ने बारात को आते हुए देखा तो ताई माँ से बड़े ही उत्सुकतापश जिज्ञासा हुई कि यह सब क्या हो रहा है? तब ताई ने बड़े लाड़–प्यार से समझाया कि जो छोड़े पर बैठा है वह दूल्हा है। मीराबाई ने फिर प्रश्न किया मां! मेरा

दूल्हा कौन है? मेरा भी विवाह कर दो। ताई ने मजाक करते हुए कहा–

"तेरा दूल्हा तो आएगा कृष्ण सरीखा काला,

तेरे होथों से कलवाएंगे उसको वरमाला।"

मीराबाई ने एक बार फिर सहज भाव से पूछा इस संसार में सबसे बड़ा कौन है? ताई ने कहा– 'मोहन से बड़ा न जग में काई'

मीरा ने उसी क्षण मन ही मन में संकल्प लेकर,

मोहन हो हृदय में स्थापित कर बोली–

"मीरा बोली फिर तो माँ मोहन ने व्याह करूँगी,

रात दिवस उसके चरणों में अपना ध्यान धरूँगी।।"

इस तरह ताई ने भी मीराबाई के हृदय के कृष्ण को पाने का बीजारोपण कर दिया। अब मीराबाई को भी पूर्ण विश्वास हो गया कि गिरधर गोपाल ही उसके पति प्रियतम और सर्वस्व है। अपने मन को अपने इष्ट के चरणों में समर्पित करती हुई उनके ही गुणगान करती रहती।

संसार एवं अपने ही परिवार के लोगों की यंत्रणा और पीड़ाएँ झेलते–झेलते उनका मन एवं हृदय बहुत दुखी रहने लगा अब मीराबाई अपने इष्ट देव की खोज में द्वारिका का लंबा रास्ता अपनाती है। मीराबाई को भी पूर्ण आभास हो जाता है कि गिरधारी अब वृंदावन में नही मिलेंगे इस लिए उनसे मिलने के लिए वह द्वारका पहुँच जाती है।

मीराबाई के जीवन भर की कठिन परीक्षाओं का अंत हुआ और परम ब्रह्म ने उनकी अंतिम अभिलाषा को पूरा कर दिया–

''हाथ बढ़ाकर गिरधारी ने कहा कि मीरा आओ,

पूर्ण हो गई आयु तुम्हारी अब मुझ में मिल जाओ।

इसी दिवस की मैं वर्षों से करता रहा प्रतीक्षा,

आज हमारे महा मिलन की पूर्ण हो गई इच्छा।।''

अब मीराबाई को लग रहा था कि मानो उनके प्रियतम के मुख मंडल पर मुस्कान के कमल खिले हुये हो और पूर्व जन्म की बिछुड़ी हुई राधा का मिलन हो रहा है।

कवि ने लिखा है–

''सुनते ही मीरा के प्राणों ने शरीर को छोड़ा,

परम ज्योति में ज्योति मिल गई जग से नाता तोड़ा।

वहां खड़े भक्तों के मन में हा–हाकार मचा था,

मंदिर मे जाकर देखा तो कुछ भी नहीं बचा था।।''

वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है जैसे मीराबाई की करूणा एवं भक्ति के आसपास ही पं. दामोदर शर्मा भी अपनी भक्ति का इकतारा बजा रहे है। उनकी साहित्यिक चेतना में आध्यात्मिक चेतना का समागम हुआ है।

पं. दामोदर शर्मा का मानना है कि ''सूली ऊपर सेज पिया की'' की सामन्तवाद की मीरा, द्वापरयुग के अध्यात्मवाद की राधा का पुनर्जन्म है। कृष्ण के विछोह में राधा ने अपने हृदय में पिरोया है और अंत में कृष्ण में समाकर पूर्णता को प्राप्त किया है। यह

कालजयी कृति मीरा की कृष्ण भक्ति के संदर्भ में विश्व साहित्य की अमर धरोहर के रूप में जानी जाएगी।

मीराबाई पर केंद्रित उनका खण्डकाव्य (सूली ऊपर सेजपिया की) हिन्दी जगत में उनका यह अवदानों अतुलनीय है। पं. दामोदर शर्मा समकालीन गीत परंपरा के प्रतिनिधि गीतकार है। उनके इस खण्डकाव्य में युगबोध, परिवेश की प्रतिध्वनि विप्लवराग और नूतन सौन्दर्य बोध के साथ मानवीय मूल्यों को बचाने का भरसक प्रयास किया है। वे शोषण के विरूद्ध आवाज उठाते है और कुव्यवस्था को सुव्यवस्था में बदलने का आहवान भी करते है।

इक्कीसवीं सदी में हिन्दी में रचे गये खण्डकाव्यों में से एक उनका यह खण्डकाव्य अपनी अलग पहचान रखता है। पं. दामोदर शर्मा ने यह खण्डकाव्य रचकर लोक प्रियता के शिखरों को भी हुआ लेकिन उनके स्वभाव की सरलता और हृदय की तरलता ज्यों की त्यों बनी रही। देश के प्रख्यात गीत–मनीषियों एवं समलोचकों द्वारा उन्हें गीत–ऋषि के रूप में भी सम्मानित किया गया।

संदर्भ सूची

1. *सूली ऊपर सेज पिया की, पं. दमोदर शर्मा प्रकाशक चर–अचर, कोलकता, संस्करण 2001*
2. *कहना है असंभव, पं. दमोदर शर्मा, अनुभव प्रकाशन गाजियाबाद, संस्करण 2012*
3. *मन वंधा नही, पं. दमोदर शर्मा, हिंमाशु प्रकाशन ग्वालियर*
4. *गीत अष्टक, पं. दमोदर शर्मा, साहित्य सागर 161वी शिसक कांग्रेस नगर बाग मुग लीया भोपाल, संस्करण 2012*
5. *गीत राग, डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य*
6. *लोक मंगल पत्रिका, डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य*